विषयानुक्रम

विषयानुक्रम

पृष्ठ संख्या

प्राक्कथन — क -- छ

प्रथम अध्याय : देवेश ठाकुर : व्यक्तित्व तथा कृतित्व — 1--25

१] जीवन - परिचय |

क] जन्म, शिक्षा तथा पुरस्कार |
ख] पारिवारिक परिवेश |
ग] अर्थोपार्जन |
घ] साहित्य सृजन प्रारम्भ |
ड.] अध्यापकीय पेशा |
च] विवाह तथा सन्तान |
छ] संघर्षमय जीवन |

२] निष्कर्ष |

३] व्यक्तित्व |

क] बाह्यरूप |
ख] वेशभूषा |
ग] दिनचर्या तथा शौक |
घ] आंतरिक रूप |
ड.] स्वाभिमानी और ईमानदार |
च] सादगी और सरलता |
छ] संयमी, दृढनिश्चयी तथा आस्थावान |
ज] संघर्षशील और कार्यक्षम |
झ] निर्णयक्षमता |
ञ] फक्कड और हँसमुख |
ट] सच्चा मित्र |
ठ] अनुशासन प्रिय |

४] निष्कर्ष |

५] कृतित्व |

पृष्ठ संख्या

क] एकांकी |
ख] कविता |
ग] बालसाहित्य तथा कॉलेजोपयोगी |
घ] कहानी |
ङ.] उपन्यास |
च] शोध और समीक्षा |
छ] संपादन कार्य |

६] निष्कर्ष |

द्वितीय अध्याय : "भ्रमभंग" उपन्यास की कथावस्तु | 26--42

१] उपन्यास : स्वरूप |

२] उपन्यास के तत्त्व |

३] अध्ययन की सीमा |

४] कथावस्तु : स्वरूप |

५] शीर्षक : स्वरूप |

६] भ्रमभंग की कथावस्तु |

क] अध्यायगत विवरण |
ख] कथावस्तु का विश्लेषण |
ग] कथावस्तु की विशेषताएँ |

७] शीर्षक की सार्थकता |

८] निष्कर्ष |

तृतीय अध्याय : "भ्रमभंग" उपन्यास के पात्र तथा कथोपकथन | 43--65

अ] "भ्रमभंग" उपन्यास के पात्र |

१] पात्र : स्वरूप |

२] चरित्र-चित्रण का महत्त्व |

३] उपन्यास का नायक चन्दन :

क] वास्तव पात्र |
ख] युवापीढी का प्रतीक |
ग] "लघुमानव" युवक |
घ] संघर्षशील युवक |
ङ.] सक्रीय तथा कर्मठ युवक |
च] विद्रोही युवक |

पृष्ठ संख्या

छ] प्रगतिशील युवक |
ज] प्रतिबध्द चेतना का युवक |
झ] संस्कार संपन्न युवक |
ञ] ईमानदार युवक |

४] सुमन शाह :

क] कोमल व्यक्तित्व |
ख] आधुनिक नारी |
ग] प्रेमविषयक दृष्टिकोण |
घ] गूढ चरित्र |

५] शुभी :

क] सरल तथा सीधी |
ख] स्वावलंबी |
ग] परिवार के लिए कुर्बानी |
घ] पतिनिष्ठा |
ड.] आदर्श भारतीय नारी |

६] गौण पात्र |

७] चरित्र-चित्रण की सफलता |

८] निष्कर्ष |

आ] कथोपकथन |

१] क] कथोपकथन का स्वरूप |
ख] कथोपकथन के गुण |
ग] कथोपकथन के अभिनव रूप |

२] "भ्रमभंग" में कथोपकथन |

३] निष्कर्ष |

चतुर्थ अध्याय : "भ्रमभंग" उपन्यास में देश - काल - वातावरण तथा उद्देश्य | 66--92

अ] देश - काल - वातावरण |

१] स्वरूप |

२] स्थानीय रंग |

३] महानगरीय वातावरण |

क] आवास |
ख] यातायात |
ग] होटल - क्लब संस्कृति |
घ] मध्यवर्गीय का आर्थिक जीवन |
ङ.] अर्थकेन्द्रित रिश्ते |
च] मुक्त यौन-सम्बन्ध |
छ] गुण्डागर्दी का माहौल |
ज] भ्रष्टाचार का माहौल |
झ] कुण्ठित मनोवृत्ति |

४] प्रकृति चित्रण |

५] निष्कर्ष |

आ] उद्देश्य |

१] स्वरूप |

२] "भ्रमभंग" का उद्देश्य |

३] विविध अभिप्राय |

४] व्यवस्था परिवर्तन |

५] सार्थक विद्रोह |

६] संदेश |

७] जीवन - सिध्दान्त |

८] निष्कर्ष |

पंचम अध्याय : "भ्रमभंग" उपन्यास का प्रस्तुति शिल्प | 93--134

१] शिल्प-विधि : स्वरूप|

२] प्रस्तुति शिल्प से तात्पर्य |

३] भाषा |

४] शब्द-प्रयोग के विभिन्न रूप |

पृष्ठ संख्या

क] तत्सम शब्द |
ख] तद्भव शब्द |
ग] विकृत शब्द |
घ] बम्बइया हिंदी के शब्द |
ङ.] मराठी के शब्द |
च] विदेशी शब्द |
छ] अरबी शब्द |
ज] फारसी शब्द |
झ] अंग्रेजी शब्द |
ञ] अंग्रेजी के विकृत शब्द |
ट] व्दिरुक्त शब्द |
ठ] ध्वन्यार्थक शब्द |
ड] निरर्थक शब्द |
ढ] अपशब्द |
ण] नये रचित शब्द |

५] भाषा सौन्दर्य के साधन |

क] विशेषण |
ख] रूपक |
ग] उपमान |

६] शब्दशक्तियाँ |

७] प्रतीक |

८] बिम्ब |

९] मुहावरें और कहावतें |

१०] सूक्तियाँ |

११] वाक्य विश्लेषण |

१२] युगीन विचारधाराओं के अनुकूल भाषा |

१३] मनोवैज्ञानिक शब्दावली |

१४] व्यंग्यात्मक शब्दावली |

१५] छायावादी शब्दावली |

१६] सीमाएँ |

१७] निष्कर्ष |

१८] शैली : स्वरूप निरूपण

पृष्ठ संख्या

१९] विविध शैलियाँ -

क] आत्मकथात्मक शैली ।
ख] पत्रात्मक शैली ।
ग] डायरी शैली ।
घ] पूर्व-दीप्ति शैली ।
ङ.] चेतना प्रवाह शैली ।
च] दृश्य शैली ।
छ] नाटय शैली ।
ज] संवाद शैली ।
झ] समय-विपर्यय शैली ।
ञ] विश्लेषणात्मक शैली ।
ट] सांकेतिक शैली ।
ठ] प्रतीकात्मक शैली ।
ड] एकालाप शैली ।
ढ] व्यंग्यात्मक शैली ।
ण] विसादृश्य शैली ।
त] सिनेरिया शिल्प ।
थ] चिह्न शैली ।
द] विवरणात्मक शैली ।

२०] निष्कर्ष ।

उपसंहार । 135--143

परिशिष्ट । 144--160

१] देवेश ठाकुर : संक्षिप्त परिचय ।
२] देवेश ठाकुर के अबतक प्रकाशित ग्रन्थ ।
३] डॉ. देवेशजी से प्राप्त पत्र ।
४] डॉ. देवेश ठाकुर से एक साक्षात्कार ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि । 161--163